भारतीय सामन्तवादी व्यवस्था : एक अध्ययन

सौरभ
सहायक व्यख्याता (इतिहास)
गोपीनाथ सिंह महिला महाविद्यालय

सारांश

भारत प्राचीन काल से ही केन्द्रकृत शासन व्यवस्था द्वारा संचालित होता रहा था। इसी परिपेक्ष्य में भारत मेंज ब सामंतवादी व्यवस्था का प्रारंभ हुआ तो इसके परिणाम स्वरूप भारतीय शासन व्यवस्था में भी अनेक महत्वपूर्ण परिवर्तन घटित हुए। सामंतवादी व्यवस्था के उदय से नए वर्ग का प्रार्दुभाव हुआ जिसने भारतीय राजनीतिक एवं सामाजिक व्यवस्था में अमिट छाप छोडी इस व्यवस्था ने पूर्व से चली आ रही केन्द्रीकृत शासन व्यवस्था के स्वरूप को तो बदला ही साथ ही साथ समाज में अपनी शसक्त भूमिका भी निभाई।

सामंती व्यवस्था के कारण शासन कार्य में सुविधा तो प्राप्त हुई ही साथ ही सामंतो को क्षेत्र विशेष में पृशासनिक एवं न्यायीक कार्यो में भागीदारी ने केन्द्र के बोझ को हल्का किया। इसके कारण आर्थिक स्थानीयकरण एवं प्रांतीय शासन व्यवस्था की भावना पनपी। इसके कारण कई लाभ हुए पर इसके कई दुश्परिणाम भी सामने आए जिसमें केन्द्र का कमजोर पड़ना, सामंतो द्वारा केन्द्र से भी शक्तिशाली हो कर उन्हें चुनौती देना इत्यादि। इसके गुण एवं दोषों के मूल्यांकन करने पर हम पाते हैं कि इस व्यवस्था ने तात्कालीन परिवेश में ऐसी नई व्यवस्था शुरू की जिसने तात्कालीन परिस्थितियों में महती भूमिका निर्वाहन किया। .....

To read full Paper, subscribe the journal.
Link Of Subscription….